RESSA
रेसा
पुष्प-मंडी
PUSHPA-MANDI
'खुशबू कैसे ना आये मेरी बातों से यारों,
मैंने बरसों से एक ही फूल से मोहब्बत की है।।"

RESSA

रेसा

दिल अगर दिल है तो वाबस्ता-ए-ग़म भी होगा
निकहत-ए-गुल भी कहीं गुल से जुदा रहती है

RESSA

रेसा

फूल ही फूल याद आते हैं

[illegible]

RESSA

रेसा

काँटों से गुज़र जाता हूँ दामन को बचा कर
फूलों की सियासत से मैं बेगाना नहीं हूँ

RESSA

रेसा

मैं चाहता था कि उस को गुलाब पेश करूँ

वो खुद गुलाब था उस को गुलाब क्या देता

RESSA

रेसा

फूल तो फूल हैं आँखों से घिरे रहते हैं
काँटे बेकार हिफ़ाज़त में लगे रहते हैं

RESSA

रेसा

फूल ही फूल खिल उठे मुझ में
कौन आया तेरे ख्यालों में

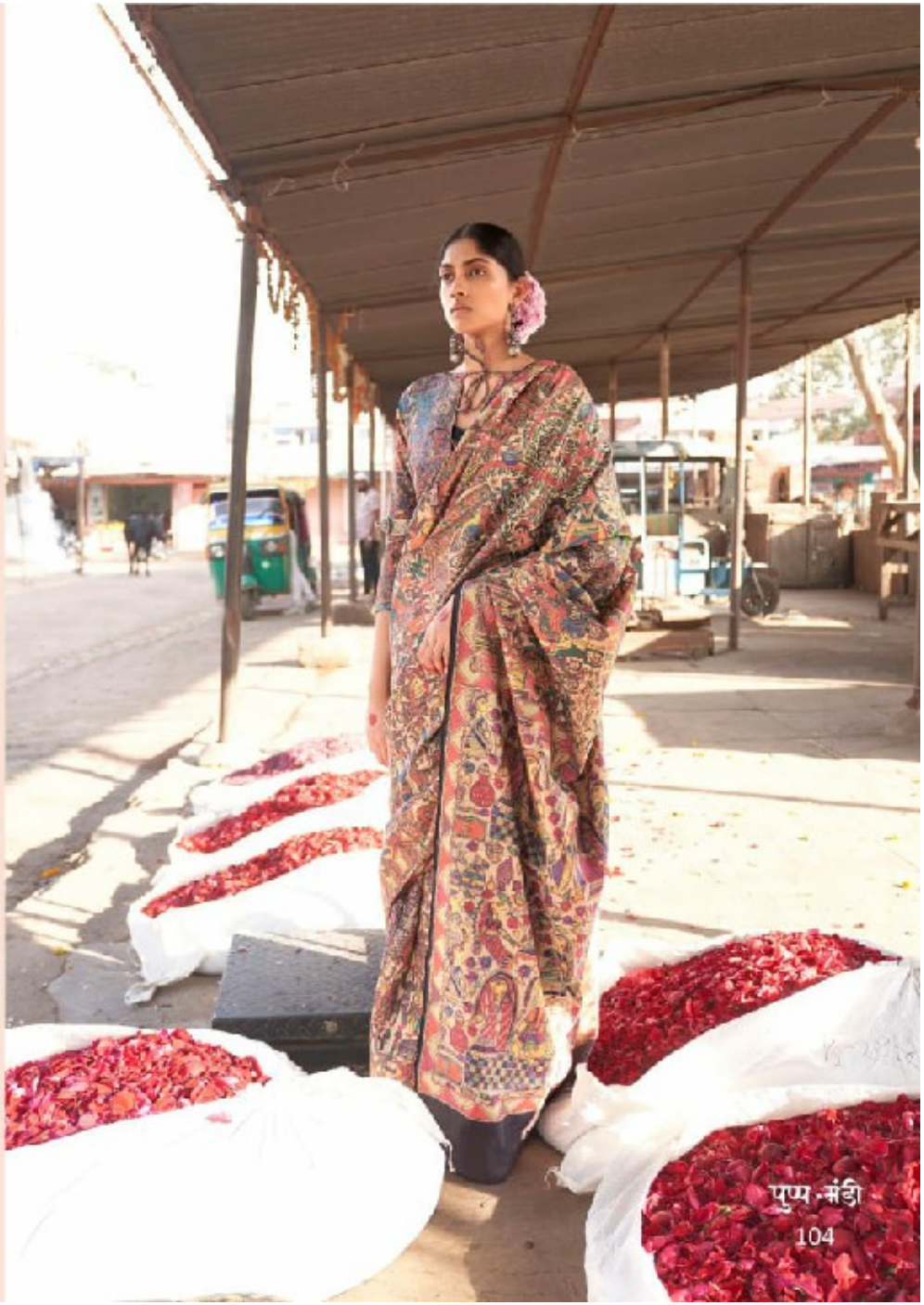

RESSA

रेसा

मुस्कुराते हुए फूल का कहना है,
मुस्कुराते हुए जीवन का हर ग़म सहना है।

पुष्प-मंडी

103

महसूस तो करते हैं मगर छू नहीं सकते,
तुम फूल नहीं, फूल की खुशबू की तरह हो।

RESSA

तस्वीर मैंने मांगी थी शोखी तो देखिए
इक फूल उसने भेज दिया है गुलाब का

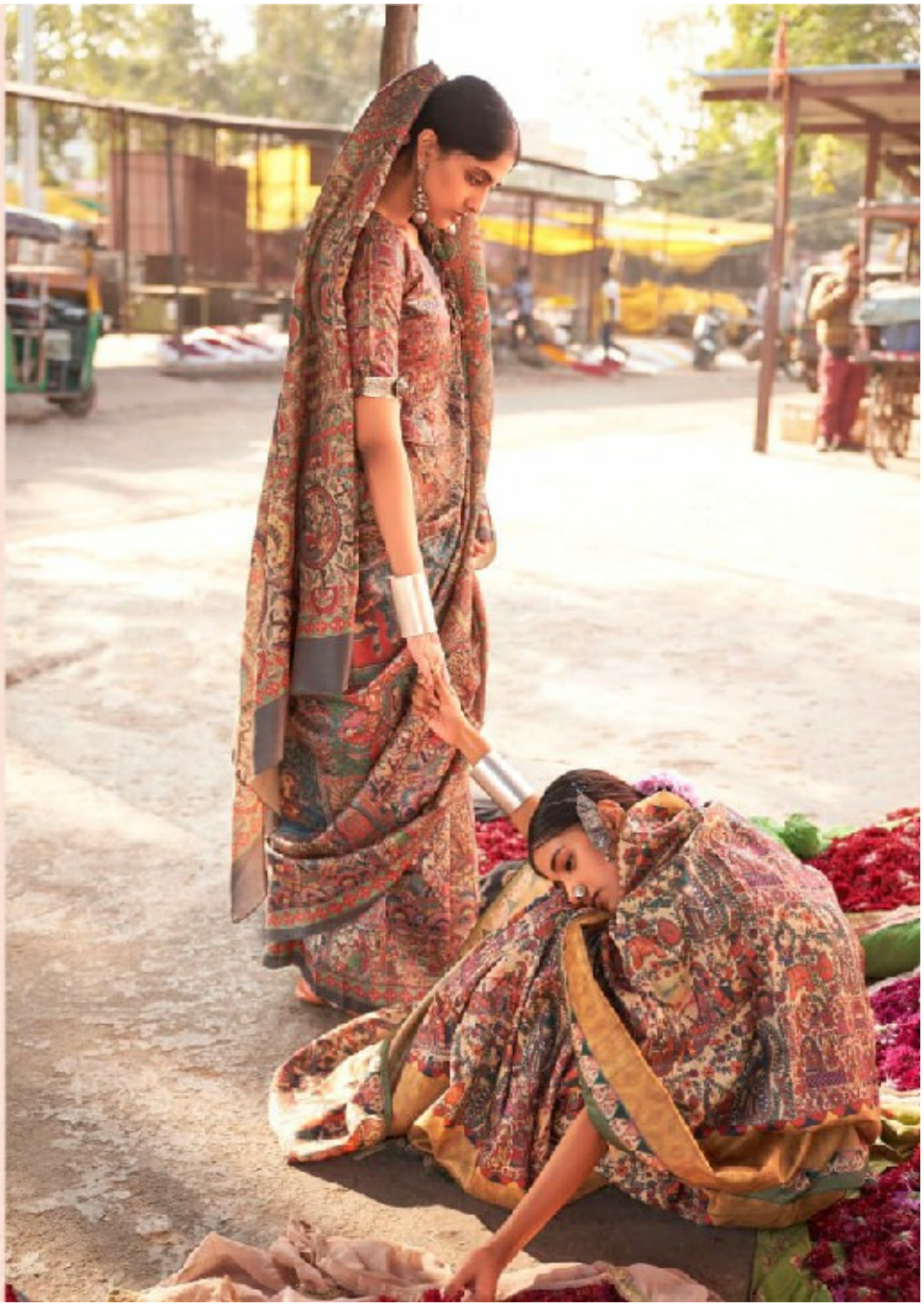

RESSA
रेसा

काँटों से घिरा रहता है चारों तरफ से फूल
फिर भी खिला रहता है, क्या खुशमिजाज़ है

RESSA

रेसा

हम जान छिड़कते हैं जिस फूल की खुशबू पर
वो फूल भी काँटों के बिस्तर पे खिला होगा

RESSA

रेसा

कई तरह के तकाज़े पसंद हैं उस को
मगर जो बात यहाँ फूल से निकलता है

पुष्प-मंडी 101

पुष्प-मंडी 102

पुष्प-मंडी 103

पुष्प-मंडी 104

पुष्प-मंडी 105

पुष्प-मंडी 106

RESSA

रेसा

पुष्प-मंडी 107

पुष्प-मंडी 108

पुष्प-मंडी

PUSHPA-MANDI

फूल ही फूल खिल उठे मुझ में
कौन आया तेरे ख़्यालों में